माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर परम्परागत व नवीन शिक्षण उपागमों के प्रभाव का अध्ययन

सुमित्रा शर्मा[1],डॉ.वेदप्रकाश[2],डॉ. अर्चना कुलश्रेष्ठ[3]

[1]शोधकर्ता (प्रवक्ता),शंकरा कालेज ऑफ एजूकेशन, कूकस जयपुर
[2]निर्देशक,विभागाध्यक्ष, शिक्षा विभाग,महाराजा विनायक ग्लोबल विश्वविद्यालय, जयपुर
[3]सहनिर्देशिका(प्रवक्ता),शंकरा कालेज ऑफ एजूकेशन, कूकस जयपुर
Corresponding Email: sd992916@gmail.com

सारांश

प्रस्तावनाः—अधिगम एक निरन्तर एवं सार्वभौमिक प्रक्रिया है, जो सदैव और सर्वत्र चलती रहती है नवीन अनुभव एक व्यक्ति के व्यवहार मे वृद्धि तथा संशोधन करते है इसलिए ये अनुभव तथा इनका उपयोग ही सीखना या अधिगम करना कहलाता है।

उपकरण :—इस शोध पत्र में पूर्व कक्षा के प्राप्तांक एवं बुद्धि परिक्षण हेतु मोरीसन का बुद्धि परिक्षण का प्रयोग किया गया है।इस अध्ययन हेतु कक्षा 9 वीं कक्षा के विद्यार्थियों पर बुद्वि परीक्षण का प्रशासन किया गया

निष्कर्ष :—शिक्षण उपागम विद्यार्थियों की उपलब्धि में वृद्वि करता है लेकिन विभिन्न शिक्षण उपागमों का परस्पर तुलना करने पर उनमे किसी एक उपागम को श्रेष्ठ तथा अन्य को निम्न नहीं पाया गया है। इससे यह सपष्ट होता है कि विद्यार्थी विभिन्न प्रकार के अनुभवों को विभिन्न उपागमों द्वारा ही ग्रहण करते है तथा संज्ञानात्मक पक्ष में उपलब्धि प्राप्त करते है, जिससे विभिन्न अनुभवों से उनके व्यक्तित्व में गुणात्मक वृद्वि होती है

शैक्षिक निहितार्थ :—यह शोध पत्र शिक्षा जगत में शिक्षाविदों, शिक्षकों शिक्षार्थियों एवं अभिभावकों के विचारों को दिशा प्रदान करने के लिए एक प्रयास है समाज की प्रत्येक इकाई के लिए संदेश प्रदान करने वाला है। हमें निष्कर्षो से जो परिणाम ज्ञात होते है। उनके आधार पर सुझाव दिये गये जा सकते है की शिक्षाविदों को पाठ्यक्रम में नवाचार विधि से अधिगम शिक्षा को बढावा दे।

मुख्य शब्द : शिक्षण उपागम,परम्परागत शिक्षण

प्रस्तावना :—अधिगम एक निरन्तर एवं सार्वभौमिक प्रक्रिया है, जो सदैव और सर्वत्र चलती रहती है नवीन अनुभव एक व्यक्ति के व्यवहार मे वृद्धि तथा संशोधन करते है इसलिए ये अनुभव तथा इनका उपयोग ही सीखना या अधिगम करना कहलाता है। इस अधिगम की प्रक्रिया द्वारा ही व्यक्ति का विकास होता है। इसलिए वुडवर्थ ने अपनी परिभाषा में अधिगम को एक व्यक्ति विकास की प्रक्रिया माना है। जो कार्य हमें पहले कठिन जान पडते है, वे ही कार्य बाद में सरल हो जाते है। कार्य के दौरान वह उतना ही सरल होता जाता है। बार—बार अभ्यास करने के बाद वही कार्य बिना विशिष्ट प्रयास के सम्पादन किया जा सकता है। इन्ही प्रकार के कार्य के सम्पादन की प्रक्रिया को आदत कहते है, अतः आदत एक सीखा हुआ कार्य अर्थात् अर्जित व्यवहार है जो स्वतः ही होता है।

समाज में सामाजिक स्वरूप एवं प्रक्रिया को देखते हुए शिक्षण प्रक्रिया एक ऐसी प्रक्रिया होनी चाहिए जो कि विद्यार्थी में क्रियाशीलता के साथ साथ शिक्षण के प्रति रूचि उत्पन्न करे। वर्तमान शिक्षा प्रणाली अत्यन्त उबाऊ हो गई है शिक्षण में प्रयुक्त परम्परागत शिक्षण विधियों के

प्रयोग से शिक्षार्थी की शिक्षण के प्रति रूचि प्रायः नगण्य हो गई है। शिक्षा में शिक्षण विधि का बालक की शिक्षा में विशिष्ट महत्व होता है क्योंकि अच्छी शिक्षण विधि बालक के संतुलित शारीरिक, मानसिक और संवेगात्मक विकास में योगदान प्रदान करती है इसलिए वे बालक के स्वभाव का अंग बन जाती है। वर्तमान में हुए शैक्षिक प्रयोगों एवं शोधकार्यों द्वारा यह प्रतिपादित किया गया है कि शिक्षकों को बालकों को प्रभावी शिक्षण देने के लिए अधिक प्रभावशाली विधियों को खोजना एवं प्रयोग करना चाहिए ।

शिक्षा द्वारा अध्ययन की गति एवं दिशा को सुनिश्चित करने का प्रयास किया जाता है । क्योंकि अध्ययन ज्ञान को ग्रहण करने की प्रक्रिया माना गया है। बालक की ध्यान की एकाग्रता एवं अध्ययन के उद्देश्य तथा अध्ययन के प्रति छात्र की योग्यता एवं दृष्टिकोण अध्ययन को सुनिश्चित करते है। अतः शिक्षण प्रदान करने में प्रयुक्त शिक्षण विधि ऐसी होनी चाहिए जो बालक में एकाग्रता, रूचि को जागृत करे।

उपर्युक्त तथ्यों को ध्यान में रखकर यह शोध पत्र पूर्ण करने का संकल्प किया गया तथामाध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर परम्परागत व नवीन शिक्षण उपागमों के प्रभाव का अध्ययन किया गया है।

अध्ययन के उद्देश्य –

शोध पत्र में निम्नलिखित उद्देश्यों हेतु कार्य किया गया है :–

01. विभिन्न नवीन शिक्षण उपागमों द्वारा शिक्षण का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर

02. प्रभाव का अध्ययन करना।

परिकल्पनाएं :– उपर्युक्त उद्देश्यों के लिए निम्नलिखित परिकल्पनाओं का निर्माण किया गया है। :–

1.नवीन शिक्षण उपागमों द्वारा शिक्षण का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

2.उच्च एवं निम्न उपलब्धि वाले विद्यार्थियों के पूर्व परीक्षण के प्राप्तांकों के आधार पर शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर नहीं है।

3.उच्च एवं निम्न उपलब्धि वाले विद्यार्थियों के पश्च परीक्षण के प्राप्तांकों के आधार पर शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर नहीं है।

उपकरण :–

उपकल्पनाओं की जांच के लिये इस शोध पत्र में पूर्व कक्षा के प्राप्तांक एवं बुद्धि परिक्षण हेतु मोरीसन का बुद्धि परिक्षण का प्रयोग किया गया है।

न्यादर्श :– इस अध्ययन हेतु यादृच्छिक न्यादर्श का प्रयोग करते हुये प्रस्तुत जयपुर जिले के एक निजी विद्यालय को लिया गया । जिसमें 9 वीं कक्षा के विद्यार्थियों पर बुद्वि परीक्षण का प्रशासन किया गया जिसके आधार पर 40 विद्यार्थियों का यादृच्छिक (Random Method)विधि द्वारा चयन किया जाकर 2 समूहों में विभक्त किया गया है। विद्यार्थियों के दो समूहों को बुद्वि लब्धि के आधार पर निर्मित किया गया। जिसमें समूह (A)नियंत्रित समूह

समूह (B)प्रयोगात्मक समूह है प्रत्येक समूह में विद्यार्थियों की संख्या 20–20 है। दोनों समूहों में विभिन्न बुद्दिलब्धि के विद्यार्थियों को यादृच्छिक रूप से वितरित किया गया है।

आंकडों से प्राप्त परिणाम :— समूहों में अन्तर ज्ञात करने के लिए उपयुक्त सांख्यिकी का प्रयोग करते हुये एफ मूल्य ज्ञात किये गये है। प्राप्त परिणामों का प्रस्तुतीकरण एवं उनकी व्याख्या निम्न रुप में प्रस्तुत है।

शिक्षण उपागम के द्वारा शिक्षण के प्रभाव का विद्यार्थियों की उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

	sum of sqares	df	mean	f	Level 0.01
between group	245.63	4	61.40	2.42	3.78
within group	4952.75	195	25.39		

उपागम, भ्रमण उपागम, पैनल चर्चा, प्रश्नोत्तर, सेमीनार, फिल्मशो आदि के मध्य गणना करने पर एफ (f) का मान 2.42 प्राप्त हुआ है जो कि सारणी के निर्धारित मान 0.01 पर 3.78 से कम है इन सभी उपागमों के मध्य अन्तर असार्थक पाया गया है।

विभिन्न शिक्षण उपागमों द्वारा शिक्षण के प्रभाव का आरेखीय प्रदर्शन

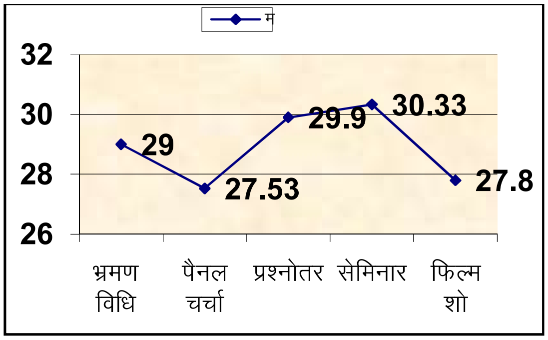

प्रयोगात्मक एवं नियंत्रित समूह में तुलनात्मक अध्ययन

समूह	पूर्व परीक्षण		पश्च परीक्षण		DM	t
प्रयोगात्मक समूह = 20	24.3	4.21	30.3	2.3	6	5.59
नियंत्रित समूह = 20	29.32	3.03	28.36	2.9	1.2	1.02

for df 38 at .01 level 2.88

विद्यार्थियों पर सेमिनार उपागम द्वारा शिक्षण करने पर प्रयोगात्मक समूह के पूर्व एवं पश्च परीक्षण के मध्यमानों के मध्य अंतर ज्ञात करने के लिए ज की गणना की गई । 38 स्वतंत्रता अंश के लिए 0.01 विश्वास स्तर पर t का मान 5.59 प्राप्त हुआ है जो कि तालिका मूल्य से अधिक है, अतः सार्थक है।

विद्यार्थियों पर परम्परागत विधि द्वारा शिक्षण करने पर नियंत्रित समूह के पूर्व एवं पश्च परीक्षण के मध्यमानों के मध्य अंतर ज्ञात करने के लिए t की गणना की गई । 38 स्वतत्रता अंश के लिए 0.01 विश्वास स्तर पर ज का मान 1.02 प्राप्त हुआ जो कि तालिका मूल्य से कम है। अतः असार्थक है।

उद्देश्य विभिन्न शिक्षण उपागम के द्वारा शिक्षण के प्रभाव का विद्यार्थियों की उपलब्धि पर तुलनात्मक अध्ययन करना।

निष्कर्ष :—

विभिन्न शिक्षण उपागमों द्वारा शिक्षण का परस्पर तुलनात्मक अध्ययन करने पर

विद्यार्थियों की उपलब्धि में कोई सार्थक प्रभाव अंतर नही है, क्योंकि शिक्षण उपलब्धि को हमेशा ही बढ़ाता है विभिन्न उपागमों का विद्यार्थियों द्वारा विषयवस्तु को ग्रहण करने में सुग्राहीता होती है। अतः प्रत्येक शिक्षण उपागम विद्यार्थियों की उपलब्धि में वृद्वि करता है लेकिन विभिन्न शिक्षण उपागमों का परस्पर तुलना करने पर उनमे किसी एक उपागम को श्रेष्ठ तथा अन्य को निम्न नहीं पाया गया है। इससे यह सपष्ट होता है कि विद्यार्थी विभिन्न प्रकार के अनुभवों को विभिन्न उपागमों द्वारा ही ग्रहण करते है तथा संज्ञानात्मक पक्ष में उपलब्धि प्राप्त करते है, जिससे विभिन्न अनुभवों से उनके व्यक्तित्व में गुणात्मक वृद्वि होती है।

विभिन्न शिक्षण उपागमों का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर सकारात्मक प्रभाव प्राप्त हुआ है। भ्रमण उपागम को अन्य उपागमों के साथ तुलना करने पर कोई अंतर प्राप्त नहीं हुआ है। इसका तात्पर्य है कि अन्य उपागम तथा भ्रमण उपागम समान प्रभाव रखते है। पैनल परिचर्चा को अन्य उपागमों के साथ तुलना करने पर कोई अंतर प्राप्त नहीं हुआ है । इसका तात्पर्य है कि सेमिनार, प्रश्नोत्तरी व फिल्म शो जैसे उपागम तथा पैनल परिचर्चा उपागम द्वारा विद्यार्थी सार्थक उपलब्धि प्राप्त करते है।

शोधार्थी द्वारा प्रयोग के दौरान यह अनुभव किया गया कि विद्यार्थी सामान्य रूप से शिक्षण करने की अपेक्षा इन उपागमों द्वारा शिक्षण करने पर अधिक सक्रिय रहते है, विषय वस्तु के प्रति अधिक जिज्ञासु होते है तथा उनमें अभिरूचि का स्तर काफी बढ़ जाता है। विद्यार्थी आनंद से विषयवस्तु को ग्रहण करते है। विद्यार्थी उबाऊ, व नीरस शिक्षण प्रणाली से निकलकर एक नवीन व प्रयोगात्मक शिक्षण उपागम के प्रति अधिक रोमांचित हो जाते है तथा इन उपागमों से विद्यार्थियों को करके सिखने का अनुभव प्राप्त होता है और वह प्रत्यक्ष अनुभव प्राप्त करते है। जैसे भ्रमण उपागम में उन्हें निर्धन क्षेत्र का अध्ययन कराने से उनके ज्ञान में वृद्वि होने के साथ–साथ उन्हे प्रत्यक्ष स्थिति विशेष का अवलोकन कर अनुभव प्राप्त हुआ।

शैक्षिक निहितार्थ :–

यह शोध पत्र शिक्षा जगत में शिक्षाविदों, शिक्षकों शिक्षार्थियों एवं अभिभावकों के विचारों को दिशा प्रदान करने के लिए एक प्रयास है समाज की प्रत्येक इकाई के लिए संदेश प्रदान करने वाला है। हमें निष्कर्षो से जो परिणाम ज्ञात होते है। उनके आधार पर निम्न सुझाव दिये गये जा सकते है :–शिक्षाविदों को चाहिए कि पाठ्यक्रम में नवाचार विधि से अधिगम शिक्षा को बढावा दे। पाठ्यक्रम ऐसा बनाया जाए जिसमें नवाचार प्रणाली का प्रयोग संभव हो तथा पुस्तकों की रचना के समय भी नवाचार प्रणाली की गतिविधियों का समायोजन किया जाना चाहिए।विद्यालय प्रशासन को चाहिए कि वह नवाचार प्रणाली को बढावा दे। समय सारणी में भी नवाचार प्रणाली को स्थान दिया जाना चाहिए। विद्यालय प्रशासन द्वारा शिक्षकों को निर्देश दिया जाए कि शिक्षण कार्य में नवाचार प्रणाली प्रणालियों का अधिकाधिक

उपयोग करें तथा शिक्षकों को इस विधि का प्रयोग करने हेतु अभिप्रेरित भी किया जाना चाहिए।विद्यार्थियों को भी चाहिए कि वे अपने अवकाश के समय का सदुपयोग नवाचार प्रणाली की विधियों द्वारा नया ज्ञान सीखकर अर्जित करने में लगाये। घर में अभिभावकों को भी चाहिए कि वे अपने बच्चों को नवाचार प्रणाली विधियों के माध्यम से पढने के लिए प्रोत्साहित करें।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

- बधेका;गिजुभाई (2000);माण्टेसरी शिक्षा पद्धति; नई दिल्ली संस्कृति साहित्य प्रकाशन
- महेन्दले मानसी कस्तूरे पदमजा (2011) Indion strems Research Journal Vol, Issue -VII , बी.एड छात्रों की शैक्षिक सांख्यिकी उपलब्धियों पर सहकारी अधिगम तिथि के प्रभाव शोलापुर विश्वविद्यालय, भारत
- Pachaury,Dash,Puri(2009),MES-052 Psychology of Learning And teaching ,New Dehli:Print Pack.
- पाण्डेय ; बैकुण्ठ ;2004 ; प्राथमिक कक्षाओं में गतिविधियों आधारित शिक्षण; नई दिल्ली ; प्रकाशन संस्थान
- रायजादा,बी.एस(1997),शैक्षिक अनुसंधान के आवश्यक तत्व,जयपुरः राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी।
- Reese W. Hayhe and Lipsittp, Lewis (1970), Experimental Child Psychology, New York and London: Academic Press.
- शर्मा सविता एवं कुमारी मीना (2011) छोटे–छोटे समूह में सीखना एवं नवाचार प्रणाली का छठी कक्षा स्तर के विद्यार्थियों के गणित विषय के प्रदर्शन पर प्रभाव। (Book an International Journal of education an social Development½ Delhi university)
- सक्सेना(2010),नवाचारी शिक्षण पद्धतियाँ,जयपुर :राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी।
- व्यास,शर्मा(2010) ,अधिगम शिक्षण और विकास के मनोसामाजिक आधार,जयपुरःराजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी ।